केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450, 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :47 अंक 224 सोमवार 9 मार्च 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

ट्रेलर ने टेम्पो को मारी टक्कर, दो की मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कोतवाली थाना क्षेत्र के हरदिया चौराहे के पास रविवार को एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने टेम्पो को टक्कर मार दी। इस हादसे में टेम्पो में सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पांच अन्य लोग घायल हो गए।

टेम्पो में लगभग सात लोग सवार थे और वह सवारी लेकर जा रहा था। हरदिया चौराहे के समीप सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रेलर ने टेम्पो को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि टेम्पो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और उसमें सवार लोग सड़क पर गिर गए।

हादसे के बाद मौके पर अफरा–तफरी मच गई। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी और घायलों को बाहर निकालने में मदद की। कोतवाली पुलिस सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची और एंबुलेंस की सहायता से सभी घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका उपचार जारी है।

पुलिस कस्टडी में आरोपी ने की आत्महत्या की कोशिश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लालगंज थाना क्षेत्र में पुलिस अभिरक्षा के दौरान एक आरोपी ने आत्महत्या का प्रयास किया। रविवार दोपहर आरोपी ने शौचालय की खिड़की का शीशा तोड़कर उसके टुकड़े से अपने गले पर वार कर लिया। घटना के बाद थाना परिसर में अफरा–तफरी मच गई। पुलिस ने घायल युवक को तत्काल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटी पहुंचाया, जहां उपचार के बाद उसे वापस थाने लाया गया और कानूनी कार्रवाई पूरी कर न्यायालय भेज दिया गया।

जानकारी के अनुसार, भरवलिया गांव निवासी 26 वर्षीय आशिक अली पुत्र असलम के खिलाफ जनवरी 2025 में दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट सहित गंभीर धाराओं में लालगंज थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा था, जहां से करीब चार–पांच माह बाद उसे जमानत मिल गई थी।

बताया जाता है कि शनिवार को आशिक अली बानपुर गांव में उसी बालिका के घर पहुंच गया, जिसके संबंध में उस पर मुकदमा दर्ज था। इसकी जानकारी होने पर बालिका के परिजनों ने उसे कमरे में बंद कर 112 पीआरवी को सूचना दी। मौके पर पहुंची पीआरवी पुलिस आशिक अली को हिरासत में लेकर लालगंज थाने ले आई।

थाना प्रभारी विनय कुमार पाठक ने बताया कि रविवार दोपहर करीब डेढ़ बजे आरोपी आशिक अली ने शौच जाने की बात कही। पुलिसकर्मियों द्वारा उसे शौचालय ले जाया गया, जहां उसने खिड़की का शीशा तोड़कर उसके टुकड़े से अपने गले पर वार कर लिया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिसकर्मियों ने उसे तत्काल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटी पहुंचाया। पीएचसी बनकटी के चिकित्सक डॉ. अभिषेक यादव ने बताया कि युवक ने गले पर वार किया था और हाथ की नस काटने का भी प्रयास किया था। प्राथमिक उपचार के बाद उसकी स्थिति खतरे से बाहर बताई गई है।

युद्ध जारीः ईरान ने इजरायल और अमेरिका को दी चेतावनी

लखनऊ (आभा)। मध्य पूर्व में जारी भीषण युद्ध के बीच इजरायली सेना ने ईरान से दागी गई नई बैलिस्टिक मिसाइलों का पता लगाने की पुष्टि की है। इसके तुरंत बाद रविवार को तेल अवीव के आसमान में कम से कम 10 जोरदार विस्फोटों की गूंज सुनाई दी, जिससे शहर में सायरन बज उठे और लोग बम शेल्टर की ओर भागे। इस बीच ईरान ने बड़ा दावा किया है। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने रविवार को ऐलान किया कि ईरानी सेनाएं अमेरिका और इजरायल के खिलाफ मौजूदा गति से कम से कम छह महीने तक तीव्र युद्ध लड़ने में पूरी तरह सक्षम हैं।

मिडिल ईस्ट में अमेरिका–इजरायल और ईरान के बीच जारी भीषण संघर्ष के बीच तेल अवीव में रविवार को कम से कम 10 बड़े धमाकों की गूंज सुनाई दी। इजरायली सेना ने पुष्टि की कि ईरान से दागी गई नई बैलिस्टिक मिसाइलों का पता चला है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, आसमान में मिसाइलों और इंटरसेप्टर सिस्टम के बीच टकराव से ये विस्फोट हुए। आईडीएफ ने बताया कि एयर डिफेंस सिस्टम पूरी तरह सक्रिय हैं और खतरे को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल नादव शोशानी ने मीडिया ब्रीफिंग में दावा किया कि ईरान की सैन्य क्षमता में क्षेत्रीय स्तर पर भारी गिरावट आई है, खासकर उसकी मिसाइल और नौसेना शक्ति बुरी तरह प्रभावित हुई है।

मिडिल ईस्ट में युद्ध की आग भड़कने के बीच एशिया में भी टेंशन बढ़ गई है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने रविवार सुबह 6 बजे (स्थानीय समय) अलर्ट जारी करते हुए बताया कि ताइवान के आसपास 7 चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के विमान देखे गए हैं। साथ ही क्षेत्रीय जलक्षेत्र में 7 चीनी नौसैनिक जहाज भी मौजूद पाए गए। यह घटना ऐसे समय हुई है जब वैश्विक स्तर पर युद्ध की आशंका बढ़ रही है।

संघर्ष के दूसरे सप्ताह में प्रवेश करने के साथ ईरान ने मजबूत रुख अपनाया है। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने रविवार को दावा किया कि ईरानी सेनाएं अमेरिका और इजरायल के खिलाफ कम से कम छह महीने तक युद्ध लड़ने में पूरी तरह सक्षम हैं।

घरेलू गैस मूल्य वृद्धि वापस ले सरकार– महेन्द्र श्रीवास्तव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कांग्रेस आरटीआई विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष और पूर्वान्चल प्रभारी महेन्द्र श्रीवास्तव ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस से एक दिन पूर्व घरेलू एलपीजी सिलेंडरों की कीमत में 60 रुपये और व्यावसायिक सिलेंडरों की कीमत में 115 रुपये की वृद्धि करने के सरकार के निर्णय की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुये कहा कि देश की जनता, घरेलू महिलायें पहले से ही मंहगाई से त्रस्त थी, सरकार ने उन पर और बोझ लाद दिया है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि पहले तो सरकार ने कहा कि अमेरिका, इजराइल, ईरान युद्ध का भारत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, ईरान का पर्याप्त भण्डार मौजूद है, बाद में जनता की मजबूरी समझे बिना घरेलू एलपीजी सिलेंडरों की कीमत में 60 रुपये करके मुश्किलें बढ़ा दी। उन्होने आशंका व्यक्त किया कि सरकार डीजल,पेट्रोल की कीमतों में भी कभी भी वृद्धि कर सकती है। यह चिन्ताजनक है। कांग्रेस नेता

–मंहगाई, बेरोजगारी से परेशान हैं लोग, भाजपा सरकार की नीतियां जन विरोधी

महेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि मोदी सरकार ने महंगाई घटाने का वायदा किया था किन्तु भाजपा की सरकार में गरीबों का जीना मुश्किल हो गया है। वक्त आने पर जनता इसका हिसाब लेगी। कहा कि केंद्र सरकार सब्सिडी या टैक्स में कटौती कर जनता को राहत दे। देश में बढ़ती बेरोजगारी के बीच मंहगाई से जीना मुश्किल हो जायेगा।

महिलाओं की भूमिका और सशक्तिकरण पर विमर्श

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। नगर बाजार में दिशा संस्था के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज में महिलाओं की भूमिका, उनके अधिकारों और कर्तव्यों पर विस्तार से चर्चा की गई, साथ ही महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में समाजसेवी राना दिनेश प्रताप ने कहा कि जहां नारियों को सम्मान के साथ उनके अधिकार दिए जाते हैं, वहां समाज और राष्ट्र का निश्चित रूप से उत्थान होता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में नारी को आदिकाल से ही देवी के रूप में पूजनीय मानने की बात कही। उन्होंने महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं और समाज में अन्याय के विरुद्ध उनकी शक्ति पर प्रकाश डाला।

विशिष्ट अतिथि विद्यालय की प्रधानाचार्य श्यामलता उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के साथ–साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को जीवन के अंधकार को दूर कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली रोशनी बताया। प्रधानाचार्य ने जोर दिया कि शिक्षित महिला न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

इस अवसर पर राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य इंद्रावास सिंह ने कहा कि महिलाओं को समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए परिवार और बुजुर्गों की देखभाल के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

विश्वनाथ प्रताप बने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा जिलाध्यक्ष

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा संगठन विस्तार के क्रम में प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह के अनुमोदन तथा प्रदेश वरिष्ठ महामंत्री अश्वनी कुमार सिंह 'लालू' की संस्तुति पर मण्डल अध्यक्ष सुनील कुमार सिंह 'राजू' द्वारा एपीएन डिग्री कॉलेज बस्ती के पूर्व छात्र नेता तथा ग्राम प्रधान चन्दोखा विश्वनाथ प्रताप सिंह को बस्ती जिले का अध्यक्ष बनाया गया है।

रविवार को गोरखपुर के एक निजी होटल में आयोजित बैठक में संगठन के पदाधिकारियों की उपस्थिति में विश्वनाथ प्रताप सिंह को बस्ती जनपद का जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उनके मनोनयन पर बधाई देते हुए प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह ने आशा व्यक्त की है कि बस्ती जिले में संगठन और अधिक मजबूत होगा।

इस दौरान मुख्य रूप से संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह, प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, वरिष्ठ महामंत्री अश्वनी कुमार सिंह 'लालू', मंडल अध्यक्ष सुनील कुमार सिंह 'राजू', प्रदेश मीडिया प्रभारी संजय सिंह, मंडल उपाध्यक्ष इंद्रसेन सिंह, मंडल उपाध्यक्ष युवा मानवेंद्र प्रताप सिंह, जिला वरिष्ठ महामंत्री राजकुमार सिंह श्रीनेत, राहुल सिंह, ठाकुर आयुष्मान सिंह, अनुभव सिंह, संगम शाही, सत्यम शाही, शशांक, विजय, मानवेंद्र पाल, लाल कृष्ण, विश्वजीत सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

राम जी का पेड़ा बनाने के लिये 100 गांवों की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को 1–1 लाख की सहायता

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस और श्रीमंत शंकर देव की जन्म जयंती के अवसर पर रविवार को पं. अटल बिहारी वाजपेयी प्रेक्षागृह में पहल संस्था के संरक्षक मनीष मिश्रा द्वारा 100 गाँवों की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को राम जी का पेड़ा बनाने हेतु 1–1 लाख रूपये मदद की पहली किस्त जारी की गई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दिल्ली के सैनिक फार्म के बगलामुखी पीठ के पीठाधीश्वर पूज्य गुरूजी की उपस्थिति रही। हजारों की संख्या में उपस्थित महिलाओं ने गुरु जी का और मनीष मिश्रा का जय श्री राम के नारे के साथ स्वागत किया।

पहल संस्था के संरक्षक मनीष मिश्रा ने 100 गाँवों की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को राम जी का पेड़ा बनाने हेतु 1–1 लाख रूपये मदद की पहली किस्त जारी करते हुये कहा कि आधी दुनियां में किसी भी क्षेत्र को विकसित करने की अपार शक्ति है। पहल ने इसे बड़े पवित्र संकल्प को लेकर आरम्भ किया है। इससे कई घरों में खुशियां आयेंगी और लोगों को स्वरोजगार प्राप्त होगा।

–महिलाओं के स्वालम्बी होने से बढ़ेंगी खुशियां, होगा विकास– मनीष मिश्रा

कार्यक्रम में मनीष मिश्रा ने अपनी भविष्य की योजनाओं की घोषणा करते हुए अप्रैल माह में 1000 महिलाओं को सिलाई मशीन वितरित करने की, तथा मई माह में वीर सावरकर सेवाश्रम की शुरुआत की भी घोषणा की, जिसमें केवल एक रूपये में अल्ट्रासाउंड, डायग्नोसीस और एक्सरे की सुविधाएँ बस्ती की जनता के लिए उपलब्ध रहेंगी।

कार्यक्रम में पहल के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक प्रियदर्शी, पहल के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष जी डी मिश्रा, आलोक पाण्डेय के साथ ही बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

लालगंज पहुंची शंकराचार्य की धार्मिक यात्रा

लखनऊ (आभा)। ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती रविवार को लालगंज पहुंचे। यहां उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने मीडिया और अनुयायियों को संबोधित किया। बृजेंद्र नगर के दुर्गा माता मंदिर परिसर में शंकराचार्य ने कहा कि जो व्यक्ति गौ माता को मानता है वह उस पर अत्याचार नहीं कर सकता। जो ऐसा करता है, वह किसी भी दशा में हिंदू नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि गाय के मांस से आय करने वालों को सनातन समाज कभी माफ नहीं करेगा।

उन्होंने प्रयागराज में बटुकों के साथ हुई मारपीट और उनकी चोटी खींचने की घटना पर भी प्रतिक्रिया दी। कहा कि बटुकों के साथ दुर्व्यवहार करने वाले दोषियों के खिलाफ सरकार को कार्रवाई करनी चाहिए।

कांशीराम जयंती में हिस्सा लेने 15 को लखनऊ जाने की तैयारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। आगामी 15 मार्च को बहुजन समाज पार्टी संस्थापक कांशीराम जयंती के अवसर पर राजधानी लखनऊ के पुरानी जेल रोड पर स्थित कांशीराम स्मारक स्थल पर ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में बस्ती जनपद के निर्णायक भागीदारी के लिये जनपद के गांव–गांव जाकर लोगों से आग्रह किया जा रहा है कि वे रैली में पहुंचे। कार्यक्रम की सफलता और बस्ती से बड़ी संख्या में भागीदारी को लेकर बसपा नेता डा. सचिन श्रीवास्तव द्वारा बस्ती सदर विधानसभा क्षेत्र के अनेक गांवों में सघन सम्पर्क जारी है। कहा कि सम्पर्क के दौरान बसपा की सरकार में किये गये कार्यों और बहन सुश्री मायावती के उद्देश्य, लक्ष्य की जानकारी दी जा रही है।

बसपा नेता डा. सचिन श्रीवास्तव ने बताया कि बहुजन समाज पार्टी संस्थापक कांशीराम जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता में विशेष उत्साह है। बताया कि उन्होने खझौला, परसाजाफर, कड़र, रसूलपुर, ओडवारा, सिसवा, देवरिया माफी, मुजहना, बोदवल, मुण्डेरवा बाजार के साथ ही बस्ती सदर विधानसभा क्षेत्र के अनेक गांवों में निरन्तर सम्पर्क जारी है।

–बसपा नेता डा. सचिन श्रीवास्तव ने झोंकी ताकत, तेज किया सम्पर्क अभियान

डा. सचिन श्रीवास्तव के साथ अभिनव सिंह, अंजनी पाण्डेय, ई. राजेश प्रताप सिंह, प्रद्युम्न सिंह, भाष्कर पाण्डेय, विकास, विवेक सिंह, शिवम कुमार, सुभाष यादव, मो. जावेद आदि ने निरन्तर सम्पर्क के द्वारा ताकत झोंक दिया है।

कायस्थ सेवा ट्रस्ट मण्डल, जिला कार्यकारिणी का विस्तार पदाधिकारियों को दिलाया शपथ, रचनात्मक कार्यो पर जोर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कायस्थ सेवा ट्रस्ट मण्डल कार्यकारिणी और जिला कार्यकारिणी का विस्तार और शपथ ग्रहण समारोह चित्रगुप्त मंदिर में संस्थापक अजय कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

मण्डल कार्यकारिणी में मोनू श्रीवास्तव को मण्डल प्रभारी सिद्धार्थ नगर, डब्बू श्रीवास्तव को मंडल प्रभारी बस्ती, व प्रकाश मोहन श्रीवास्तव को मण्डल प्रभारी संत कबीर नगर बनाया गया। इसी प्रकार सर्वेश श्रीवास्तव को मंडल संयोजक, नवीन श्रीवास्तव को मंडल अध्यक्ष, आलोक श्रीवास्तव को मंडल महामंत्री, राहुल श्रीवास्तव, सुनील श्रीवास्तव, अजय श्रीवास्तव, अभय श्रीवास्तव व विक्रांत श्रीवास्तव को मंडल उपाध्यक्ष तथा कुलदीप श्रीवास्तव, मुकेश कुमार श्रीवास्तव, संजीव श्रीवास्तव और गौरव श्रीवास्तव को मंडल सचिव बनाया गया। वहीं अंकुर श्रीवास्तव को संगठन मे सलाहकार समिति का सदस्य बनाया गया।

इसी प्रकार जिला कार्यकारिणी में राजेश कुमार श्रीवास्तव को जिला संयोजक, प्रेमचंद श्रीवास्तव को जिला प्रवक्ता, मुकेश कुमार श्रीवास्तव को जिला अध्यक्ष, अरुण कुमार श्रीवास्तव को महामंत्री, अभिषेक श्रीवास्तव गुडलक को संगठन महामंत्री, नितेश श्रीवास्तव को संगठन मंत्री, आदर्श श्रीवास्तव व रणदीप माथुर को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अभिषेक कुमार श्रीवास्तव, शिवनंदन कुमार श्रीवास्तव, अजय कुमार श्रीवास्तव व मनीष श्रीवास्तव को जिला सचिव तथा राजेश कुमार श्रीवास्तव, रत्नेश कुमार श्रीवास्तव, देवव्रत लाल श्रीवास्तव को जिला उपाध्यक्ष बनाया गया। इसी कम में विवेक श्रीवास्तव को रौता पार का वार्ड अध्यक्ष, प्रिंस श्रीवास्तव को पिकौरा शिव गुलाम का वार्ड अध्यक्ष, अमित श्रीवास्तव को आवास विकास कॉलोनी का वार्ड अध्यक्ष, मनोज श्रीवास्तव को बैरिहवा का वार्ड अध्यक्ष तथा सौरभ श्रीवास्तव को रौता पार मोहल्ले का महामंत्री नियुक्त किया गया। इसी प्रकार कृपा शंकर श्रीवास्तव को सल्टौआ गोपालपुर और रुधौली का ब्लॉक अध्यक्ष तथा रमेश श्रीवास्तव को रामनगर का ब्लॉक अध्यक्ष बनाया गया। कार्यक्रम को दिनेश कुमार श्रीवास्तव मास्टर साहब, के के श्रीवास्तव, नवीन श्रीवास्तव, राजेश श्रीवास्तव, अंकुर श्रीवास्तव, रंजीत श्रीवास्तव, सुनील पाण्डेय , डब्बू श्रीवास्तव प्रकाश मोहन श्रीवास्तव सहित अन्य लोगों ने संबोधित करते हुये एकजुटता के साथ रचनात्मक कार्यो पर जोर दिया। कार्यक्रम में मयंक श्रीवास्तव तथा संगठन के संरक्षक सौरभ सिन्हा ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाया।

रसोईयां पाक कला प्रतियोगिता में इंदू, पूजा, पुष्पा ने मारी बाजी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जनपद स्तरीय रसोइयां पाक कला प्रतियोगिता का आयोजन बीएसए कार्यालय के परिसर में रविवार को किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अनूप कुमार तथा जिला समन्वयक मध्यान्ह भोजन अमित कुमार मिश्र द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष भाजपा विवेकानन्द मिश्र का बुके और स्मृति देकर स्वागत किया गया। प्रतियोगिता में कुल 14 ब्लॉक और नगरक्षेत्र के कुल 30 रसोइयों ने प्रतिभाग किया। निर्णायक समिति में जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, प्रधानाचार्य राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, प्रवक्ता गृह विज्ञान राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, प्रतिष्ठित होटल के एक कुक, स्वास्थ्य अधिकारी जिला महिला चिकित्सालय तथा राजकीय आदर्श पूर्व माध्यमिक विद्यालय नगरक्षेत्र बस्ती में पढ़ने वाले 20 बच्चे रहे। लॉटरी के माध्यम से प्रतियोगिता में बनाये जाने वाले व्यंजन का चयन निर्णायक समिति के बच्चो द्वारा किया गया, जिसमें समस्त रसोइयों को मौसमी सब्जी तथा सोयाबीन युक्त तहरी बनाना तय हुआ। समस्त निर्णायक मण्डल तथा बच्चों द्वारा भोजन को चखकर तथा बनाने के तरीके आदि के आधार पर परिणाम घोषित किया गया। प्राथमिक विद्यालय बैड़ारी एहतमाली कुदरहा की इन्दू देवी प्रथम, प्राथमिक विद्यालय गन्धरिया गजराज साऊंघाट की पूजा द्वितीय तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय महुआलखनपुर कप्तानगंज की पुष्पा तृतीय स्थान पर रहीं। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 3500, द्वितीय पुरस्कार में 2500 तथा तृतीय पुरस्कार में 1500 रुपया और अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 300–300 रूपये प्रदान किये गये। सभी प्रतिभागियों को साथ में प्रमाण–पत्र तथा आवागमन भत्ता प्रदान किया गया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन श्री राजेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से विनय चौधरी, अनूप कुशवाहा, अर्पणा भरद्वाज, विनोद कुमार त्रिपाठी, अमृता सिंह, डा. सन्तोष कुमार मौर्य, स्वप्निल श्रीवास्तव, आलोक त्रिपाठी, सत्येन्द्र चन्द्र श्रीवास्तव, रविशंकर मिश्र, बब्बन पाण्डेय, उमाशंकर पाण्डेय, सन्तोष पाण्डेय, अनिल कुमार पाण्डेय, प्रवीण श्रीवास्तव, गौरव त्रिपाठी, सिद्धान्त कुमार, वीरेन्द्र कुमार शुक्ल, अनिल यादव, रामकृष्ण आदि उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 9 मार्च 2026 सोमवार

सम्पादकीय

बचपन बचाने की मुहिम

डिजिटल क्षेत्र में भारत के अग्रणी राज्य कर्नाटक ने सोलह साल से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया के घातक प्रभावों से बचाने के लिये देश में सबसे पहले अनुकरणीय पहल की है। राज्य सरकार ने 2026–27 के बजट सत्र के दौरान घोषणा की है कि किशोरवय अब सोशल मीडिया का उपयोग नहीं कर सकेंगे। यह निर्णय अभिभावकों की उस चिंता को कम करता है जो अनियंत्रित डिजिटल गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले जोखिम से परेशान थे। जिसमें साइबर बुलिंग व साइबर धोखाधड़ी भी शामिल है। कर्नाटक की पहल के बाद आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने भी विधानसभा में घोषणा की है कि अगले नब्बे दिनों के भीतर 13 साल से कम उम्र के बच्चों द्वारा सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगा दी जाएगी। इस तरह आंध्र प्रदेश कर्नाटक के बाद ऐसा सख्त फैसला लेने वाला दूसरा राज्य बनने जा रहा है। इस प्रकार ये दो राज्य तेजी से ऑनलाइन होती दुनिया में 'किशोरों की सुरक्षा कैसे की जाए', की वैश्विक बहस में शामिल हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि ऐसी पहल पहले आस्ट्रेलिया और फ्रांस आदि देशों में हो चुकी है। हालांकि, इन राज्यों की पहल सराहनीय है, लेकिन इस प्रतिबंध का प्रभावी क्रियान्वयन कैसे सुनिश्चित होगा, इसका प्रारूप अभी स्पष्ट नहीं है। दरअसल, देश–दुनिया के मनोवैज्ञानिक और बाल स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने बार–बार चेतावनी दी है कि सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग किशोरों के मानसिक और भावनात्मक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। उल्लेखनीय है कि इस चिंता का जिक्र 2025–26 के केंद्र सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण में भी किया गया था। कर्नाटक व आंध्र प्रदेश की यह पहल तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी परिदृश्य के प्रति एक सुरक्षात्मक दृष्टिकोण ही दर्शाती है। लेकिन यहां सवाल उठता है कि इस कार्य योजना को अमलीजामा कैसे पहनाया जाएगा? यह हकीकत जानते हुए कि आज के डिजिटल युग में, स्मार्टफोन और ऐप्स शिक्षा, संचार और दैनिक जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि तमाम स्कूल असाइनमेंट और अपडेट के लिये मैसेजिंग एप्स, ऑनलाइन पोर्टल और डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर निर्भरता बढ़ गई है। यही वजह है कि छात्रों द्वारा 'शैक्षिक' और 'सामाजिक' उपयोग के बीच अंतर करना मुश्किल साबित हो सकता है। वहीं चिंता की बात यह भी कि किशोरों की आयु का सत्यापन कैसे व्यावहारिक बनाया जा सकेगा। वहीं देखना होगा कि सोशल मीडिया को संचालित करने वाली तकनीकी कंपनियां किस हद तक इस दिशा में सहयोग करेंगी। सहयोग न मिलने पर प्रतिबंध की व्यावहारिकता पर सवालिया निशान लग सकते हैं। उन परिवारों में जहां एक ही मोबाइल फोन का परिवार के अन्य सदस्य भी उपयोग करते हैं, वहां प्रतिबंध की व्यावहारिकता पर सवाल लग सकते हैं। उल्लेखनीय है कि आस्ट्रेलिया में पहले ही सोलह साल से कम उम्र के बच्चों के लिये सोशल मीडिया के उपयोग पर प्रतिबंध लागू है। वहीं दूसरी ओर फ्रांस जैसे अन्य देश भी सख्त डिजिटल सुरक्षा नियमों को लागू करने को लेकर गंभीर हैं। इसमें दो राय नहीं कि बच्चों को बेहतर डिजिटल सुरक्षा दी जानी जरूरी है, लेकिन केवल नियमन मात्र से इस जटिल समस्या का समाधान संभव नहीं हो सकता है। इस दिशा में सार्थक परिवर्तन सरकारों, स्कूलों, तकनीकी प्लेटफॉर्मों और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अभिभावकों के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा। हालांकि, किशोरों को सोशल मीडिया की विकृतियों से बचाने के लिये तात्कालिक पहल केंद्र सरकार की तरफ से की जाती तो उसका देशव्यापी प्रभाव होता। लेकिन इसके बावजूद यदि कर्नाटक व आंध्र प्रदेश ने इस दिशा में पहल की है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि अन्य राज्य भी इससे प्रेरणा ले सकेंगे। फिर निश्चित तौर पर केंद्र सरकार को भी देश में एक केंद्रीय कानून लाने को बाध्य होना पड़ सकता है। वहीं केंद्र सरकार को इस मुद्दे पर विषय विशेषज्ञों और समाज के विभिन्न वर्गों से भी राय लेनी चाहिए। ऐसे वक्त में जब बच्चों का स्क्रीन टाइम एक लत के रूप में लगातार बढ़ा है तथा उनकी एकाग्रता कम होने से पढ़ाई बाधित हो रही है, तो इस संकट का समाधान केंद्र व राज्यों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

यूपीएससी परिणामों में जामिया का दम

-अखिल कुमार यादव-

देश की सबसे प्रतिष्ठित और कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल संघ लोक सेवा आयोग सिविल सेवा परीक्षा के हालिया परिणामों में एक बार फिर जामिया मिल्लिया इस्लामिया की रेजिडेंशियल कोचिंग अकादमी (RCA) ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। वर्ष 2025 के सिविल सेवा परीक्षा परिणाम, जो इसी माह मार्च में घोषित हुए, में जामिया की इस अकादमी के 38 छात्रों ने अंतिम सूची में जगह बनाई। इन सफल उम्मीदवारों में 15 छात्राएं भी शामिल हैं, जो सिविल सेवा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का संकेत देती हैं। विशेष रूप से चार छात्रों ने ऑल इंडिया टॉप–50 में स्थान हासिल किया, जिनकी रैंक क्रमशः 7, 14, 24 और 29 रही। यह उपलब्धि न केवल जामिया के लिए गौरव की बात है बल्कि यह भी दर्शाती है कि सीमित संसाधनों के बावजूद प्रतिभाशाली छात्र देश की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवाओं तक पहुंच सकते हैं।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की आवासीय प्रशिक्षण अकादमी (Residential Coaching Academy) पिछले कई वर्षों से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कराने वाले प्रमुख संस्थानों में गिनी जाती है। यह अकादमी विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर कोचिंग एंड करियर प्लानिंग के अंतर्गत संचालित होती है और इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के प्रतिभाशाली युवाओं को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण कोचिंग उपलब्ध कराना है। यहां चयनित छात्रों को न केवल विशेषज्ञ शिक्षकों से पढ़ाई कराई जाती है बल्कि उन्हें हॉस्टल, लाइब्रेरी, अध्ययन सामग्री, टेस्ट सीरीज और इंटरव्यू गाइडेंस जैसी सुविधाएं भी दी जाती हैं, जिससे वे पूरी तरह तैयारी पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

RCA की स्थापना वर्ष 2010 में हुई थी और तब से यह सिविल सेवा की तैयारी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरी है। अपनी स्थापना के बाद से यह अकादमी सैकड़ों सिविल सेवकों को तैयार कर चुकी है, जिनमें भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS) और अन्य केंद्रीय सेवाओं के अधिकारी शामिल हैं। कई ऐसे छात्र भी रहे हैं जिन्होंने देशभर में शीर्ष रैंक हासिल कर जामिया का नाम रोशन किया है। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2021 में सिविल सेवा परीक्षा की ऑल इंडिया रैंक–1 हासिल करने वाली श्रुति शर्मा और वर्ष 2018 के तीसरे स्थान पर रहे जुनैद अहमद भी इसी अकादमी से जुड़े रहे हैं।

दरअसल, जामिया की RCA का मॉडल इस मायने में अलग है कि यह केवल पढ़ाई कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों को एक समग्र शैक्षणिक वातावरण प्रदान करती है। यहां प्रारंभिक परीक्षा (Prelim), मुख्य परीक्षा (Main) और साक्षात्कार (Interview) के तीनों चरणों की तैयारी व्यवस्थित रूप से कराई जाती है। नियमित कक्षाओं के साथ–साथ उत्तर लेखन अभ्यास, मॉक टेस्ट, विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और पूर्व सफल अभ्यर्थियों से संवाद जैसी गतिविधियां भी आयोजित की जाती हैं। इस समग्र प्रशिक्षण का परिणाम है कि त्र। से पढ़ने वाले छात्र लगातार यूपीएससी जैसी कठिन परीक्षा में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

जामिया प्रशासन के अनुसार RCA में प्रवेश भी आसान नहीं होता। इसके लिए हर वर्ष एक प्रतिस्पर्धी प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है जिसमें देशभर से हजारों छात्र आवेदन करते हैं, जबकि चयन सीमित संख्या में ही होता है। उदाहरण के तौर पर कुछ वर्षों में हजारों आवेदनों के बीच से लगभग 150 छात्रों को ही प्रशिक्षण के लिए चुना जाता है। यह चयन प्रक्रिया छात्रों की बौद्धिक क्षमता, सामान्य ज्ञान और विश्लेषणात्मक सोच का परीक्षण करती है।

इस वर्ष यूपीएससी परिणामों में आरसीए का प्रदर्शन इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि यह पिछले वर्षों की उपलब्धियों को आगे बढ़ाने वाला है। वर्ष 2024 की सिविल सेवा परीक्षा में भी जामिया की इस अकादमी के 32 छात्रों ने सफलता हासिल की थी, जिनमें 12 छात्राएं शामिल थीं। उस वर्ष 78 छात्रों ने इंटरव्यू चरण तक पहुंचकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था, जिनमें से 32 अंतिम सूची में जगह बनाने में सफल रहे।

वर्तमान परिणाम में 38 छात्रों की सफलता यह दर्शाती है कि अकादमी की तैयारी पद्धति और मार्गदर्शन लगातार प्रभावी साबित हो रहा है। चार छात्रों का टॉप–50 में आना इस उपलब्धि को और भी खास बना देता है। यह न केवल संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रमाण है बल्कि यह भी बताता है कि यहां पढ़ने वाले छात्र राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

आरसीए की सफलता के पीछे कई कारण बताए जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण है यहां का अनुशासित अध्ययन वातावरण और अनुभवी शिक्षकों का मार्गदर्शन। अकादमी में पढ़ाने वाले शिक्षकों के साथ–साथ सेवानिवृत्त नौकरशाहों और सफल सिविल सेवकों को भी समय–समय पर आमंत्रित किया जाता है ताकि वे छात्रों को प्रशासनिक अनुभव और परीक्षा रणनीति के बारे में जानकारी दे सकें। इसके अलावा छात्रों के लिए नियमित मॉक इंटरव्यू और व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

इस अकादमी की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देती है। यहां विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदाय, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उम्मीदवारों को अवसर प्रदान करने पर जोर दिया जाता है। यही कारण है कि आरसीए से निकलने वाले कई सफल उम्मीदवार ऐसे परिवारों से आते हैं जहां पहले कभी किसी ने सिविल सेवा में जाने का सपना भी नहीं देखा था।सफल उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि भी इस संस्थान की भूमिका को स्पष्ट करती है। कई छात्र ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जहां उच्च स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध नहीं होते। जामिया की आरसीए उन्हें न केवल शिक्षा देती है बल्कि आत्मविश्वास भी प्रदान करती है। दिल्ली जैसे बड़े शहर में रहकर पढ़ाई करने की सुविधा और विशेषज्ञ मार्गदर्शन उनके सपनों को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि जामिया की यह पहल भारतीय लोकतंत्र की उस भावना को मजबूत करती है जिसमें हर प्रतिभाशाली व्यक्ति को समान अवसर मिलना चाहिए। यूपीएससी जैसी परीक्षा में सफलता का मतलब केवल एक प्रतिष्ठित नौकरी हासिल करना नहीं है, बल्कि यह देश की प्रशासनिक व्यवस्था में योगदान देने का अवसर भी है। जब विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्र प्रशासनिक सेवाओं में प्रवेश करते हैं तो शासन व्यवस्था अधिक समावेशी और संवेदनशील बनती है।

आज के समय में जब प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एक बड़े उद्योग का रूप ले चुकी है और निजी कोचिंग संस्थानों की फीस लाखों रुपये तक पहुंच जाती है, तब जामिया की रेजिडेंशियल कोचिंग अकादमी जैसे संस्थान यह साबित करते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मार्गदर्शन समाज के हर वर्ग तक पहुंचाया जा सकता है। यही कारण है कि आरसीए को देश में सिविल सेवा तैयारी के सबसे सफल और भरोसेमंद संस्थानों में से एक माना जाता है।

यूपीएससी के ताजा परिणामों में 38 छात्रों की सफलता और चार का टॉप–50 में स्थान बनाना इस बात का प्रमाण है कि प्रतिभा किसी भी सामाजिक या आर्थिक सीमा से बंधी नहीं होती। सही दिशा, संसाधन और मेहनत के साथ कोई भी छात्र अपने सपनों को साकार कर सकता है। जामिया मिलिया इस्लामिया की रेजिडेंशियल कोचिंग अकादमी इसी विश्वास को मजबूत करती है और हर वर्ष नए युवाओं को देश सेवा के लिए प्रेरित करती रहती है।

इस उपलब्धि के साथ यह उम्मीद और भी मजबूत होती है कि आने वाले वर्षों में भी रेजिडेंशियल कोचिंग अकादमी (RCA) से निकलने वाले छात्र सिविल सेवा परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता हासिल करेंगे और देश की प्रशासनिक व्यवस्था को नई ऊर्जा और दृष्टि प्रदान करेंगे।

नारी शक्ति का नया युग और चुनौतियां

—ललित गर्ग—

मानव सभ्यता के विकास की कथा में यदि किसी शक्ति ने सबसे अधिक सृजन किया है, तो वह नारी शक्ति है। वह जीवन की जननी है, संस्कृति की वाहक है और समाज की संवेदनशील आत्मा है। भारतीय परंपरा ने नारी को केवल एक सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे 'माता' के रूप में सर्वोच्च आदर दिया। 'मातृदेवो भवः' की वाणी से लेकर 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की घोषणा तक हमारी संस्कृति में नारी के प्रति श्रद्धा का अद्वितीय भाव दिखाई देता है। यही कारण है कि भारत में धरती, गौ और मातृभूमि तक को 'माता' कहकर संबोधित किया गया। किन्तु विडम्बना यह है कि जिस समाज ने नारी को देवी का दर्जा दिया, उसी समाज में आज भी नारी असुरक्षा, भेदभाव और हिंसा का सामना कर रही है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 हमें केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं देता, बल्कि यह अवसर देता है कि हम नारी की वास्तविक स्थिति का गंभीर आत्ममंथन करें। विश्व स्तर पर किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि नारी की स्थिति में प्रगति अवश्य हुई है, किन्तु समानता, सुरक्षा एवं स्वतंत्रता की यात्रा अभी लंबी है। विश्व आर्थिक मंच की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2025 के अनुसार विश्व में लैंगिक समानता का लगभग 68.8 प्रतिशत अंतर ही समाप्त हो पाया है, अर्थात अभी भी लगभग एक तिहाई अंतर शेष है। आर्थिक भागीदारी के क्षेत्र में यह अंतर सबसे अधिक है, जहाँ समानता केवल लगभग 61 प्रतिशत तक ही पहुँची है।

वर्ल्ड इकनोमिक फोरम कि स्थिति बताती है कि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो महिलाएँ लगभग बराबरी के स्तर तक पहुँच गई हैं, परंतु आर्थिक अवसरों और राजनीतिक नेतृत्व में अभी भी उनकी भागीदारी सीमित है। वैश्विक स्तर पर महिलाएँ कुल कार्यबल का लगभग 42 प्रतिशत ही हैं और शीर्ष प्रबंधकीय पदों पर उनकी हिस्सेदारी लगभग एक–तिहाई के आसपास है। भारत में भी स्थिति मिश्रित है। एक ओर भारतीय महिलाएँ अंतरिक्ष, विज्ञान, सेना, राजनीति और प्रशासन में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर श्रम बाजार

में उनकी भागीदारी अभी भी कम है। हाल के आँकड़ों के अनुसार भारत में महिला श्रम भागीदारी दर लगभग 32 प्रतिशत है और बड़ी संख्या में महिलाएँ घरेलू दायित्वों के कारण रोजगार से बाहर रहती हैं। बिजनेस स्टैंडर्ड के यह आँकड़े केवल संख्या नहीं हैं, वह समाज की संरचना, सोच और अवसरों की असमानता को उजागर करते हैं। आज दुनिया के अनेक देशों में महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, वैज्ञानिक, सैन्य अधिकारी और उद्योगपति के रूप में नेतृत्व कर रही हैं। भारत में भी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, वैज्ञानिक और फाइटर पायलट के रूप में महिलाओं की उपस्थिति इस परिवर्तन का प्रमाण बनी है और बन रही है। किंतु इसके साथ यह भी सत्य है कि दुनिया में अभी भी केवल सीमित देशों में ही महिलाएँ सर्वोच्च राजनीतिक पदों पर हैं और समान वेतन का प्रश्न अभी भी अधूरा है। कई अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के अनुसार महिलाओं को समान कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में औसतन कम वेतन मिलता है। एक और चिंताजनक तथ्य यह है कि संघर्ष, युद्ध और संकट की स्थितियों का सबसे अधिक दुष्प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। हाल के वैश्विक अध्ययनों के अनुसार 2024 में लगभग 67 करोड़ महिलाएँ ऐसे क्षेत्रों में रह रही थीं जो किसी न किसी प्रकार के हिंसक संघर्ष से प्रभावित थे।

नये युग की समस्याएं जैसे जलवायु परिवर्तन, युद्ध, आतंकवाद, गरीबी और डिजिटल असमानता भी महिलाओं के लिए नई चुनौतियाँ खड़ी कर रही हैं। यदि इन समस्याओं पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले दशकों में करोड़ों महिलाएँ और लड़कियाँ अत्यधिक गरीबी की ओर धकेली जा सकती हैं। इतिहास के पन्ने यह भी बताते हैं कि जब–जब समाज संकट में पड़ा, तब–तब नारी शक्ति ने असाधारण साहस का परिचय दिया। स्वतंत्रता संग्राम में रानी चेनम्मा, बेगम हजरत महल, रानी अवन्तीबाई, सरोजिनी नायडू और दुर्गा भाभी जैसी वीरांगनाओं ने यह सिद्ध किया कि नारी केवल करुणा की प्रतिमा नहीं, बल्कि संघर्ष और साहस की भी प्रतीक है। लेकिन इतिहास के इन गौरवपूर्ण अध्यायों के बावजूद सामाजिक वास्तविकता कई बार पीड़ादायक दिखाई देती है। दहेज, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, मानव तस्करी और यौन अपराध आज भी दुनिया के अनेक समाजों में मौजूद हैं। यह केवल कानून का नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता का प्रश्न है। दरअसल नारी समस्या का मूल कारण केवल बाहरी संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वह सोच है जिसने सदियों तक नारी को 'कमजोर' मानकर उसकी क्षमता को सीमित करने का प्रयास किया।

जब समाज नारी को केवल भूमिका से जोड़ता है, व्यक्ति के रूप में नहीं देखता, तभी असमानता जन्म लेती है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 का वैश्विक संदेश भी इसी दिशा में संकेत करता है– "सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए अधिकार, न्याय और वास्तविक कार्रवाई।" यह संदेश हमें याद दिलाता है कि आज भी दुनिया में महिलाओं को पुरुषों के समान कानूनी अधिकार पूरी तरह प्राप्त नहीं हैं और औसतन उन्हें पुरुषों के मुकाबले लगभग 64 प्रतिशत ही कानूनी अधिकार प्राप्त हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ कि यह स्थिति हमें सोचने के लिए बाध्य करती है कि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन कानूनों को सामाजिक चेतना में बदलना भी आवश्यक है।

तीसरे विश्वयुद्ध के मुहाने पर दुनिया

—दीपक कुमार त्यागी—

जिस दौर में पूरी दुनिया में हर देश के हुक्मरान अपने–अपने देश का सर्वांगीण विकास करने का ढिंढोरा पीट रहे हो, उस दौर में विकास के नाम पर हथियारों की एक ऐसी तेज दौड़ दुनिया में चल रही है, जिसने अभी तक तो कई देशों में भीषण युद्ध तक भी करवा दिया है और कई देशों को युद्ध के मुहाने पर लाकर के खड़ा कर दिया है, दुनिया भर में आधुनिक हथियारों व तकनीक के दम पर 21वीं सदी में युद्ध की तरह–तरह की पटकथाएं लिखी जा रही है। लेकिन 21वीं सदी के आधुनिक युग में दुनिया में एक सबसे बड़े सैन्य टकराव की मजबूत नींव रखने वाले ईरान, इजरायल और अमेरिका का महायुद्ध अगर जल्द ही नहीं रुका तो यह पूरी दुनिया के लिए बड़ा सिरदर्द बन सकता है, यह युद्ध एकबार फिर से दुनिया का नक्शा बदलने वाला साबित हो सकता है। यह युद्ध शुरुआती चंद घंटों के बाद ही भीषण युद्ध के रूप में इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुका है, मीडिया सूत्रों के अनुसार इस युद्ध में सभी पक्षों को पहले दिन से ही जान–माल का भारी नुकसान हुआ था, जो एक हफ्ता बीतने के बाद अब भी निरंतर जारी है। युद्ध क्षेत्र से बड़े पैमाने पर लोग बहुत ही तेजी के साथ से विस्थापित होते जा रहे हैं, विस्थापित होते हुए इन सभी लोगों के लिए राहत व पुनर्वास कैंपों के साथ–साथ रोटी, आवास व इलाज आदि की व्यवस्था करना दुनिया के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार अभी तक के छः दिनों के इस युद्ध में ईरान में शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व के साथ–साथ सेना के सर्वोच्च कमांडरों, सैन्यकर्मियों के साथ–साथ बड़ी संख्या में आम लोग भी इस भीषण युद्ध की विभिषिका की भेंट चढ़ चुके हैं, वहीं इजरायल व अमेरिका के साथ–साथ अन्य देशों को भी जान–माल की भारी क्षति उठानी पड़ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के माध्यम से दुनिया के सामने आये इन मौत के आंकड़ों पर नजर डालें तो मात्र छः दिनों के अब–तक के इस भीषण युद्ध में ईरान में 1045, लेबनान में 50, इजरायल में 11, जॉर्डन में 5, कुवैत में 4, यूएई में 3, बहरीन में 1 और ओमान में 1 मौतें हो चुकी हैं। साथ ही ईरान के प्रचंड

हमले से कुवैत में स्थित अमेरिका एंबेसी में 6 अमेरिकी सैनिकों की मौत हुई है और जिस तेजी गति से यह युद्ध चल रहा है आने वाले दिनों में ईरान, इजरायल–अमेरिका के साथ–साथ यह भीषण युद्ध वैश्विक स्तर पर समीकरणों के बदलाव की एक नई नींव रख सकता है।

दुनिया के साथ–साथ आगामी दिनों में इस युद्ध का भारत पर भी जबरदस्त प्रभाव पड़ने की पूरी संभावना हैं क्योंकि युद्ध से प्रभावित अलग–अलग देशों में लगभग 1 करोड़ से भी अधिक भारतीय नागरिक फंसे हुए हैं, जिन लोगों को सुरक्षित निकाल कर भारत लाना बड़ी चुनौती है। वहीं खाड़ी देशों से जिस तरह से भारतीय बिजनेसमैन व कामगार हर माह भारी–भरकम धनराशि कमाकर भारत भेजते हैं, आने वाले दिनों में उस धनराशि में भारी कमी होने की संभावना है। वहीं तेल की कीमतों में लगती तेजी की आग से दुनिया के साथ भारत में भी मंहगाई का वेग बढ़ने की पूरी संभावना है और युद्ध की विभीषिका से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में में कमी होने की पूरी संभावना है, जो विकास के पथ पर बहुत ही तेजी से अग्रसरित भारत के लिए चिंतित नहीं है। वहीं जिस तरह से आधुनिक हथियारों से सुसज्जित अमेरिका सेना की एक पनडुब्बी ने हिन्द महासागर क्षेत्र में आकर के ईरानी नौसेना के जहाज को निशाना बनाकर के ईरान के सैकड़ों नौसैनिकों को मार डाला है, वह भारत की संप्रभुता के लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण स्थिति है और भारत को भी इस युद्ध में शामिल करने की एक बड़ी साजिश लगती है।

हालांकि भारत के साथ–साथ पूरी दुनिया की नजरें इस बात पर लगी हुई हैं कि क्या आने वाले दिनों में ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच कूटनीति की मेज पर इस युद्ध का कोई तात्कालिक या दीर्घकालिक समाधान निकलेगा या फिर एक दर्जन से अधिक देशों में ड्रोन व बैलिस्टिक मिसाइलों के जलते हुए घातक बारूद की तीक्ष्ण गंध आने वाले दिनों प्रतिशोध की प्रचंड ज्वाला के साथ एक और भीषण विश्वयुद्ध की पटकथा को इतिहास में दर्ज करेगी। इस युद्ध क्षेत्र के हालातों को देखकर के लगता है कि हथियारों की होड़ व प्रतिशोध की आग में मानवीय संवेदनाएं व इंसानियत का बहुत ही तेजी से त्याग होता जा रहा है।

हालांकि इन घातक हमलों पर ईरान कह रहा है कि मध्य–पूर्व के यह सभी इस्लामिक देश उसकी बैलिस्टिक मिसाइलों के निशाने पर इसलिए आ गए हैं, क्योंकि इन सभी देशों में अमेरिका के सैन्य बेस व जंगी जहाज मौजूद हैं, इन सभी सैन्य बेसों का उपयोग ईरान के खिलाफ इजरायल व अमेरिका के द्वारा की गई साझा सैन्य कार्रवाई में हुआ है, इसलिए ईरान भी आत्मरक्षा के लिए खाड़ी देशों में बने इन सभी सैन्य बेसों व जंगी जहाजों के बेड़ों को निशाना बना रहा है, ना कि उन देशों को निशाना बना रहा है। लेकिन ईरानी हमलों के पीछे की कटु सच्चाई यह भी है कि वह अमेरिका व इजरायल के खाड़ी देशों में बने हुए बड़े–बड़े आर्थिक प्रतिष्ठानों, डाटा सेंटरों व एंबेसी आदि को निशाना बनाकर के दुश्मन देशों को आर्थिक रूप से भारी क्षति पहुंचाने की मंशा रखता है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार ईरानी सेना भी कह रही है कि अमेरिका और इजरायल के द्वारा ईरान पर किए जा रहे बड़े पैमाने पर हमलों के जवाब में ईरान सेना ने भी अमेरिका व इजरायल के पिट्ठू बने हुए कुछ खाड़ी देशों के क्षेत्र में हमले शुरू कर दिए हैं।

दो बच्चो की हत्या कर खुद फंदे पर लटक गया पिता, तीन लाशें देखकर हैरान रह गए लोग

संवाददाता–महराजगंज। सशस्त्र सीमा बल की 66 वीं वाहिनी में तैनात एक महिला एसएसबी जवान के पति और उनके दो छोटे–छोटे बच्चों का शव रविवार की सुबह स्थानीय कस्बे के गांधी नगर वार्ड स्थित उनके ही किराए के कमरे में लटकता हुआ मिला। घटना की सूचना से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।जानकारी होते ही सीओ अंकुर गौतम एवं थानाध्यक्ष पुरुषोत्तम राव मयफोर्स मौके पर पहुंचे और तीनों के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं कुछ देर बाद अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ, तहसीलदार कर्ण सिंह एवं एसएसबी के भी तमाम अधिकारियों ने घटनास्थल का जायजा लिया।

मौके की स्थिति को देख आशंका व्यक्त की गई कि महिला के पति ने पहले अपने बच्चों को बेरहमी से फंदे से लटकाया और फिर खुद के हाथ की नस काटकर कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फिलहाल पुलिस घटनाक्रम की जांच में जुटी हुई है। जानकारी के मुताबिक एसएसबी की 66 वीं वाहिनी के मुख्यालय में बतौर सफाईकर्मी तैनात बंदना निवासी मिर्जापुर थाना सैदपुर जिला गाजीपुर अपने पति अमरेश कुमार और दो बच्चों कंचन (4) वर्ष एवं अमरेंद्र (3) वर्ष के साथ कस्बे के गांधी नगर वार्ड में किराए पर कमरा लेकर रहती हैं। मिली जानकारी के मुताबिक बंदना सुबह करीब 6:30 बजे ड्यूटी पर चली गईं। कुछ देर बाद उन्हें उनके घर वालों से सूचना मिली कि अमरेश से फोन पर बात हुई है और वह कुछ अनहोनी घटना को अंजाम देने वाला है। बंदना ने बताया कि उन्होंने तत्काल अपने सहकर्मियों और स्वयं 112 नंबर पर फोन कर पुलिस को इसकी सूचना दिया और वहां से घर के लिए निकल पड़ीं। हालांकि जब तक लोग पहुंचे तब तक काफी देर हो चुकी थी। बेटी कंचन का शव किचन की खिड़की में रस्सी के सहारे लटक रहा था और बेटे अमरेंद्र का शव फंदे से टूटकर नीचे जमीन पर पड़ा हुआ था, वहीं किचन से सटे कमरे के फर्श पर खून के छीटे थे। पति के बाएं हाथ की नस कटी हुई थी और उनका भी शव छत के पंखे में कपड़ों से बने फंदे के सहारे झूल रहा था। यह नजारा देख वहां मौजूद सभी स्तब्ध रह गए। मौके पर पहुंची पुलिस घटनाक्रम की जांच और विधिक कार्रवाई में जुट गई है। वहीं घटना के बाद से ही महिला एसएसबी जवान का रो–रोकर बुरा हाल है।

थानाध्यक्ष पुरुषोत्तम राव ने बताया कि एसएसबी जवान के परिजनों को सूचना देते हुए तीनों के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। कस्बे के गांधी नगर वार्ड में फंदे से लटकते मिले शवों के घटनास्थल की जांच हेतु थानाध्यक्ष पुरुषोत्तम राव ने जिले की फॉरेंसिक टीम को इसकी सूचना दी। कुछ देर बाद मौके पर पहुंचे फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल का बारीकी से जांच और मुआयना कर आवश्यक सैंपल लिए। साक्ष्य एकत्रित करने के बाद टीम वापस लौट गई।

सीएम योगी की माता पर टिप्पणी का विरोध

संवाददाता–महराजगंज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की माता पर की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणी के विरोध में रविवार सुबह परतावल चौराहे पर भाजपा नेताओं और हिंदू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने मौलाना अब्दुल्लाह सलीम का पुतला फूंका और उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की।

भाजपा नेता काशीनाथ सिंह और हिंदू युवा वाहिनी के पूर्व पदाधिकारी के नेतृत्व में कार्यकर्ता परतावल क्षेत्र में एकत्रित हुए। उन्होंने नारेबाजी करते हुए जुलूस निकाला और परतावल चौराहे तक पहुंचे। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने विवादित टिप्पणी के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया। चौराहे पर पहुंचकर प्रदर्शनकारियों ने मौलाना अब्दुल्लाह सलीम का पुतला जलाया। उन्होंने प्रशासन से तत्काल मुकदमा दर्ज कर आरोपी की गिरफ्तारी करने की मांग की।

भाजपा नेता काशीनाथ सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की माता पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी अत्यंत निंदनीय है। उन्होंने जोर दिया कि ऐसे बयानों से प्रदेश के लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं और समाज में वैमनस्य फैलता है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रशासन को चेतावनी दी कि यदि जल्द ही आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं की गई, तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। इस मौके पर कई स्थानीय कार्यकर्ता और समर्थक मौजूद रहे। प्रदर्शन के कारण कुछ देर के लिए परतावल चौराहे पर भीड़ जुटी रही, जिसके बाद स्थिति सामान्य हो गई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, 400 मरीजों हुआ उपचार

संवाददाता–कुशीनगर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कुशीनगर विधायक पीएन पाठक के तत्वावधान में रविवार को मिनी स्टेडियम नई बाजार, टेकुआटार में लगे इस शिविर में लगभग 400 मरीजों का उपचार किया गया। विधायक की पत्नी मीनू पाठक ने घोषणा की कि विधानसभा क्षेत्र में हर 20 दिन पर ऐसे शिविर आयोजित किए जाएंगे।

शिविर में गोरखपुर और लखनऊ के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने मरीजों की जांच कर उन्हें परामर्श दिया। इसमें नेत्र रोग, कैंसर, हड्डी रोग, चर्म रोग, चेस्ट, टीबी, लीवर और बाल रोगों सहित विभिन्न सामान्य बीमारियों से पीड़ित मरीजों का परीक्षण किया गया। मरीजों को निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं। विधायक पीएन पाठक की पत्नी मीनू पाठक ने बताया कि यह पहल उन आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए है जो इलाज के लिए गोरखपुर या लखनऊ के बड़े डॉक्टरों के पास नहीं जा पाते हैं। उन्होंने कहा कि इन शिविरों के माध्यम से जरूरतमंदों को विशेषज्ञ डॉक्टरों से जांच और निःशुल्क दवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी, ताकि कोई भी मरीज पैसे के अभाव में इलाज से वंचित न रहे।

शिविर में डॉ. आनंद मिश्रा (सर्जन, पीजीआई लखनऊ), डॉ. ज्ञान प्रकाश राय, डॉ. एलके मधेशिया, डॉ. कमलेश वर्मा, माधवी मिश्रा, डॉ. विश्वजीत मिश्रा (कैंसर स्पेशलिस्ट), डॉ. रचिता मिश्रा (मेडिकल कॉलेज गोरखपुर) और एसीएमओ डॉ. एसएन त्रिपाठी (कुशीनगर) सहित कई विशेषज्ञ मौजूद रहे। कार्यक्रम के संयोजक पूर्व मंडल अध्यक्ष अमरनाथ मधेशिया थे।

इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि रुद्र प्रकाश सिंह, संजीव सिंह शिब्लू, टेकुआटार मंडल अध्यक्ष राजेश प्रताप राव, भाजपा कसया मंडल अध्यक्ष अद्या पाण्डेय, अमरजीत कुशवाहा, पूर्व मंडल अध्यक्ष अनिल प्रताप राव, रामायण कुशवाहा, रिंकू सिंह, आदित्य तिवारी, छत्रसाल मधेशिया, विनोद तिवारी, सुनील चंद कौशिक और राजू पटेल सहित कई अन्य लोग उपस्थित रहे।

पुलिस ने दो लूट–डकैती का खुलासा किया,छह आरोपी गिरफ्तार, नकदी और असलहे बरामद

संवाददाता–देवरिया। जिले की रुद्रपुर पुलिस ने डकैती और लूट की दो घटनाओं का खुलासा करते हुए छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से लूटी गई नकदी, अवैध असलहे और वारदात में इस्तेमाल की गई दो मोटरसाइकिलें बरामद की हैं। यह कार्रवाई मुखबिर की सूचना पर रुद्रपुर–डाला मार्ग स्थित लखनाघाट मोड़ के पास की गई।

गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों की पहचान गोलू यादव, राजन गुप्ता, राहुल साहनी, शिवम सिंह, रोशन यादव उर्फ छोटू और नितेश यादव के रूप में हुई है। ये सभी गोरखपुर जिले के बड़हलगंज थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों के निवासी बताए जा रहे हैं। तलाशी के दौरान इनके पास से लूटी गई नकदी, एक अवैध पिस्टल, चार अवैध तमंचे, पांच जिंदा कारतूस और दो मोटरसाइकिलें बरामद हुईं।

पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने 28 फरवरी 2026 को डहरौली बुजुर्ग स्थित ओमकार नाथ साहनी पेट्रोल पंप पर हुई लूट की घटना को अंजाम देना स्वीकार किया। इस वारदात में पेट्रोल पंप के सेल्समैन सचिन साहनी से तमंचा दिखाकर 8,440 रुपये नकद लूट लिए गए थे। पेट्रोल पंप के मैनेजर आकाश निषाद ने रुद्रपुर थाने में इसकी सूचना दी थी, जिसके बाद मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। इसके अतिरिक्त, अभियुक्तों ने 3 दिसंबर 2025 को एकौना थाना क्षेत्र में करहकोल के पास तिघरा–खैरवा बंधे पर एक मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति को रोककर उसकी स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल और मोबाइल फोन लूटने की घटना भी कबूल की है। इस मामले में भी एकौना थाने में संबंधित धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज है।

रुद्रपुर पुलिस की इस कार्रवाई से दोनों लंबित मामलों का अनावरण हो गया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं और आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ के आधार पर अन्य आपराधिक घटनाओं के संबंध में भी जानकारी जुटाई जा रही है।

गैस एजेंसी सेल्समैन पर चाकू से हमला कर बदमाशों ने ढाई लाख लूटे

संवाददाता–देवरिया। जिले में रविवार को एक गैस एजेंसी के सेल्समैन पर चाकू से हमला कर लगभग ढाई लाख रुपये लूट लिए गए। हमले में सेल्समैन गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया है।

यह घटना गौरी बाजार थाना क्षेत्र में हुई। कालापन पकड़ी टोला निवासी आकाश यादव (पुत्र अवधेश यादव) खरोह चौराहा स्थित भारत गैस एजेंसी में सेल्समैन है। रविवार को वह अपने घर से एजेंसी जा रहा था। उसके पास एक बैग था, जिसमें एजेंसी के करीब ढाई लाख रुपये नकद थे।

जीएस भट्ठा के पास पहुंचते ही घात लगाए बैठे बदमाशों ने आकाश पर हमला कर दिया। बदमाशों ने चाकू से कई वार किए, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जब आकाश ने बैग छीनने का विरोध किया, तो हमलावरों ने उस पर दोबारा चाकू से प्रहार किया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हमलावरों की संख्या लगभग छह थी। वारदात को अंजाम देने के बाद वे नकदी से भरा बैग लेकर मौके से फरार हो गए। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने घायल आकाश को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर हालत को देखते हुए उसे बेहतर इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम अस्पताल पहुंची और घायल युवक से पूछताछ कर जानकारी ली। इसके बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर जांच–पड़ताल में जुट गई। थानेदार डॉ. महेंद्र कुमार ने बताया कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है।

efgyk fnol ij rhu ;kstuk,a 'kq:] Mh,e us dgk&vc xkaoksa esa gh f'k{kk] jkstxkj vkSj rduhdh volj feysaxs

संवाददाता–गोण्डा। महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास की दिशा में एक नई पहल की शुरुआत की गई। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विकास खंड मुजेहना परिसर में आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने "गोंडा ज्ञान आवास", "गोनार्द मार्ट" और "गोंडा ज्ञानोदय" जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं का शुभारंभ किया। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख इटियाथोक, नगर पंचायत अध्यक्ष सहित कई अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने महिला स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सम्मानित किया और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को विकास की मुख्य धुरी बताया। उन्होंने कहा कि अब गांवों के आंगन ही रोजगार और शिक्षा के नए केंद्र बनेंगे और बेटियां तकनीकी युग की अगुआ बनेंगी। ज्ञान आवास मॉडल से शिक्षा और स्वरोजगार को बढ़ावा प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत बनाए गए मॉडल आवासों को "गोंडा ज्ञान आवास" की थीम पर विकसित किया गया है। इन आवासों में एक कक्ष को मां सिद्धिदात्री पुस्तकालय के रूप में विकसित किया गया है, जहां प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं के लिए वाचनालय की सुविधा उपलब्ध रहेगी। वहीं दूसरे कक्ष को महिलाओं के लिए आय सृजन केंद्र के रूप में तैयार किया गया है, जहां वे चाय–नाश्ता और स्थानीय उत्पादों की बिक्री कर सकेंगी। 101 ग्राम पंचायतों में स्थापित होंगे 'गोनार्द मार्ट' ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए 101 ग्राम पंचायतों में "गोनार्द स्वच्छता मार्ट" स्थापित किए जा रहे हैं। इन मार्ट का संचालन स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं करेंगी, जहां दैनिक उपयोग की वस्तुएं और स्वच्छता से जुड़ी सामग्री उपलब्ध होगी। मार्ट संचालन और शौचालय रखरखाव के लिए प्रत्येक समूह को प्रतिमाह छह हजार रुपये का मानदेय भी दिया जाएगा। कस्तूरबा विद्यालयों में एआई और तकनीकी शिक्षा "गोंडा ज्ञानोदय" पहल के तहत कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। यहां एआई, आईओटी और स्टेम किट से सुसज्जित टेसी थॉमस लैब स्थापित की जा रही हैं, जिससे ग्रामीण बेटियों को आधुनिक तकनीक से जुड़ने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम में जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन, ब्लॉक प्रमुख इटियाथोक, नगर पंचायत अध्यक्ष तथा अन्य अधिकारियों ने उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया।

eq[;eah ij vHkæ fVIi.kh dk vkjksi fcgkj ds ekSykuk ij dsl ntZ

संवाददाता–बलरामपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करने के आरोप में बलरामपुर पुलिस ने बिहार के एक मौलाना के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। यह कार्रवाई भाजपा जिलाध्यक्ष रवि कुमार मिश्रा द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर कोतवाली नगर पुलिस ने की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। भाजपा जिलाध्यक्ष रवि कुमार मिश्रा ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि बिहार के मौलाना अब्दुल सलीम ने एक मजहबी जलसे के दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी माता के संबंध में अभद्र एवं आपत्तिजनक टिप्पणी की है।

तहरीर में यह भी आरोप लगाया गया कि मौलाना द्वारा गौकशी से संबंधित कानून के खिलाफ अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को भड़काने का प्रयास किया गया। कहा कि इस प्रकार की अमर्यादित भाषा और आपत्तिजनक बयान से भाजपा कार्यकर्ताओं सहित हिंदू समाज में काफी आक्रोश व्याप्त हो गया है। भाजपा जिलाध्यक्ष ने इसे सामाजिक सौहार्द और कानून–व्यवस्था के लिए भी नुकसानदेह बताते हुए पुलिस प्रशासन से आरोपित के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने पुलिस से अनुरोध किया कि मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपित मौलाना के खिलाफ सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। कोतवाली नगर प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर मौलाना अब्दुल सलीम के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच की जा रही है और जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

किसी भी क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धि कम नहीं –विधायक

संवाददाता–श्रावस्ती,। जिले में रविवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। पुलिस लाइन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विधायक व अधिकारियों की ओर से उत्कृष्ठ कार्य करने वाली महिलाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मनित किया गया। इस दौरान 100 दिवसीय बाल विवाह मुक्त भारत अभियान का समापन किया गया। महिला कल्याण विभाग एवं एसोसिएशन फॉर वालेंटरी एक्शन के तत्वाधान में पुलिस लाइन स्थित लव कुश सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ विधायक राम फेरन पांडेय, जिलाधिकारी अश्विनी कुमार पाण्डेय, एडीएम अमरेन्द्र कुमार वर्मा, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी अजय कुमार यादव, सीओ समीश शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखा गया। साथ ही कार्यक्रम में मौजूद लोगों को बाल विवाह उन्मूलन के प्रति जागरूक रहने तथा बाल विवाह न होने देने की शपथ दिलाई गई। वहीं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 35 महिलाओं को प्रशस्ति–पत्र व मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। विधायक ने कहा कि आज किसी भी क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धि किसी से कम नहीं है। साथ ही सात ग्राम पंचायतों को बाल विवाह मुक्त ग्राम पंचायत घोषित किए जाने पर उन्हें प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान बच्चों की ओर से स्वागत गीत व सांस्कृतिक प्रस्तुत किए गए। इसी तरह सीएचसी मल्हीपुर में अधीक्षक डा रविन्द्र कुमार सोनकर ने उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला स्वास्थ्य कर्मियों को सम्मानित किया। 62वीं वाहिनी एसएसबी कैम्प भिनगा में केक काटकर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस दौरान संदीक्षा अध्यक्ष प्रेरणा शर्मा की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। उन्होंने महिलाओं व एसएसकी महिला कार्मिकों को जागरूक किया। सहायक कमांडेन्ट डा कल्पना महादेव पाटील ने उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार, उचित पोषण तथा नियमित स्वास्थ्य जांच के महत्व की जानकारी दी।

तेज रफ्तार बाइक डिवाइडर से टकराई, 19 वर्षीय युवक की मौत

संवाददाता–गोण्डा। लखनऊ–गोंडा हाईवे पर शनिवार देर रात तेज रफ्तार के कारण अनियंत्रित बाइक डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में 19 वर्षीय युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बाइक पर पीछे बैठा उसका 13 वर्षीय ममेरा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल किशोर को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया है। हादसे के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। बहराइच जिले के जरवल कस्बा निवासी इरकान (19) पुत्र गुड्डू अपने ननिहाल करनैलगंज आया हुआ था। वह स्टेट बैंक के सामने रहने वाले अपने मामा असलम मिस्त्री के घर ठहरा हुआ था। शनिवार देर रात वह अपने ममेरे भाई अमन (13) पुत्र असलम मिस्त्री के साथ बाइक से लखनऊ रोड स्थित ब्लॉक की ओर जा रहा था।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार मोड़ के पास बाइक की रफ्तार अधिक होने के कारण इरकान संतुलन खो बैठा और अनियंत्रित बाइक सीधे डिवाइडर से टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों सड़क पर दूर जा गिरे और बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने इरकान को मृत घोषित कर दिया।

दो दिवसीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान संपन्न

संवाददात–बलरामपुर। 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025 को भव्य दिव्य एवं अलौकिक बनाने के लिए क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी विभाग की अगुवाई में योग पखवाड़ा रैली निकाली गई। योग पखवाड़ा रैली को तुलसीपुर विधायक कैलाश नाथ शुक्ल व क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी कार्यालय से हरी झंडी दिखाकर शहर भ्रमण के लिए रवाना किया गया। पखवाड़ा जागरूकता रैली बलरामपुर नगर व भगवतीगंज नगर होते हुए क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी कार्यालय पर संपन्न हुआ। रैली में 100 से अधिक की संख्या में लोगों ने प्रतिभाग किया। तुलसीपुर विधायक कैलाश नाथ शुक्ल ने कहा कि योग के माध्यम से जटिल से जटिल बीमारियों का समाधान हो सकता है। इसलिए हर घर में योग जरूरी है। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ दिग्विजय नाथ ने कहा कि योग के माध्यम से शरीर की नाड़ियों का शोधन होता है, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। 21 जून को सुबह बलरामपुर स्टेडियम में उपस्थित होकर 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को भव्य बनाएं एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर दूसरों के लिए प्रेरणा श्रोत बनें। योग प्रशिक्षक डॉ अमरजीत ने बताया कि योग पखवाड़ा रैली का मुख्य उद्देश्य है कि लोग योग के माध्यम से अपने शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं, जिससे बारिश में उत्पन्न होने वाली बिमारियों से शरीर लड़ सके। गर्मी व बारिश के बीच के समय में योग शिविर के माध्यम से लोगों के रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए योग पखवाड़ा जागरूक रैली का आयोजन किया गया है। जिसकी थीम है कि एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य कार्यक्रम में डॉ दिग्विजय नाथ ने लोगों को धन्यवाद देकर रैली का समापन किया। कार्यक्रम को भव्य और दिव्य बनाने में गो रक्षक रवीन्द्र कमलापुरी, डॉ आरएन सिंह, निर्मल कुमार पांडेय उर्फ बब्बल पांडेय, दुर्गेश चौधरी, हंसराज वर्मा, शिव कनौजिया, मिथिलेश कुमार, डॉ राम अभिलाख मौर्या, पवन कुमार रस्तोगी, आदित्य श्रीवास्तव राम कुमार वर्मा, इफ्तिखार अहमद, विनोद कुमार शुक्ल, राघवेंद्र दुबे, डॉ दिनेश कुमार, डॉ मोहम्मद रफीक, संजय दुबे, डॉ राम जी, डॉ आदित्य प्रकाश, संजय मिश्रा, राम सुभग, अनिल सिंह सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

पुलिस भर्ती परीक्षा 14 व 15 को, शामिल होंगे 19 हजार अभ्यर्थी

संवाददाता–गोण्डा। उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड लखनऊ की ओर से आयोजित सब इंस्पेक्टर एवं समकक्ष पदों पर भर्ती के लिए लिखित परीक्षा 14 और 15 मार्च को जिले में आयोजित होगी। इसके लिए कुल 14 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। जहां दो दिन की चार पालियों में 19,000 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। डीएम प्रियंका निरंजन ने बताया कि परीक्षा को निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। डीआईओएस डॉ. राम चंद्र ने बताया कि परीक्षा को लेकर तैयारी की जा रही है। हर परीक्षा केंद्र को एक सेक्टर में विभाजित किया गया है।

उन्होंने बताया कि हर केंद्र पर सेक्टर के साथ एक स्टेटिक मजिस्ट्रेट की तैनाती की गई। इसके अलावा केंद्र व्यवस्थापक, सहायक केंद्र व्यवस्थापक, परीक्षा सहायक, कक्ष निरीक्षकों की तैनाती कर दी गई है। परीक्षा केंद्रों का चयन जिला मुख्यालय से दस किमी के दायरे में किया गया है। इनमें जीआईसी, जीजीआईसी, एलबीएस मुख्य और विज्ञान परिसर, स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज, श्री गांधी विद्यालय इंटर कॉलेज, राजकीय पॉलीटेक्निक, मां पाटेश्वरी देवी राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय, सरयू प्रसाद कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज, भैया राघव राम पांडे स्मारक श्री गांधी विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, जिगर मेमोरियल इंटर कॉलेज, कस्तूरबा बालिका इंटर कॉलेज, शहीद ए आजम सरदार भगत सिंह इंटर कॉलेज को परीक्षा केंद्र बनाया गया है।दो पालियों में होगी परीक्षारू यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा दो पालियों में आयोजित की जाएगी। हर पाली में 4800 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल होंगे। प्रश्नपत्रों की सुरक्षा के लिए कलक्ट्रेट परिसर में स्ट्रांग रूम बनाया गया है, जहां डबल लॉक व्यवस्था में प्रश्नपत्र रखे जाएंगे। स्ट्रांग रूम पर 24 घंटे पुलिस का कड़ा पहरा रहेगा। परीक्षा के दौरान कड़ी निगरानी के लिए सभी केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे से निगरानी की व्यवस्था के निर्देश दिए गए हैं। परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने के लिए प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं।

पिकअप की भिड़ंत से ऑटो के उड़े परखच्चे, चालक की मौत

संवाददाता–बहराइच। रिसिया, कटिलिया मार्ग पर जुलाहनपुरवा के निकट सुबह तेज रफ्तार पिकअप ने ई रिक्शा को भीषण टक्कर मार दी। जिसके चलते ई रिक्शा चालक की मौत हो गई। ई रिक्शा सवार तीन यात्री घायल हो गए है। घायलों को नजदीकी निजी अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। रिसिया थाने के कारीजोर निवासी राकेश यादव पुत्र मिश्री लाल (35) अपने ई रिक्शा से रविवार सुबह लगभग 6रू45 बजे शहर स्थित मंडी आ रहे थे। उनका ई रिक्शा जैसे ही जुलाहनपुरवा के पास पहुंचा। उसी दौरान रिसिया की ओर से आ रही तेज रफ्तार अनियंत्रित पिकअप ने ई रिक्शा में टक्कर मार दी।

जिससे राकेश गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें पुलिस और परिजन सीएचसी लाए। चिकित्सकों ने परीक्षण कर उसे मृत्य घोषित कर दिया। ई रिक्शा में सवार धर्मराज, उमर,रुबिया भी घायल हो गए,जिनको तत्काल नजदीक के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। चालक राकेश यादव के शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है ।

महिला दिवस पर अस्मिता लीग खेल प्रतियोगिताः सृष्टि यादव, अंशिका चौहान अक्षिता प्रथम

विजेता खिलाड़ियों को गोल्ड, सिल्वर, कांस्य पुरस्कार देकर बढाया हौसला

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय मेरा युवा भारत और खेलो इण्डिया द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रविवार को शहीद सत्यवान सिंह स्टेडियम में अस्मिता लीग के तहत खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र और विशिष्ट अतिथि भाजपा प्रान्तीय परिषद सदस्य जगदीश प्रसाद शुक्ल ने विजेता खिलाड़ियों को गोल्ड, सिल्वर, कांस्य पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर उत्साहवर्धन किया। कहा कि खेलों का जीवन में विशेष महत्व है।

यह जानकारी देते हुये जिला युवा अधिकारी अनुराग यादव ने बताया कि बालिकाओं, युवतियों की 100 मीटर की दौड़ में सृष्टि यादव प्रथम, अदिता द्वितीय और मधु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर की दौड़ में अंशिका चौहान प्रथम, तनुश्री गौतम द्वितीय और रोशनी गौड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर की दौड़ में अक्षिता प्रथम, सपना द्वितीय और मधु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जिला युवा अधिकारी अनुराग यादव ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुये कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह कार्यक्रम विशेष है जिसमें बालिकाओं, महिलाओं को अपने खेल प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर मिला। बताया कि प्रथम, द्वितीय और तृतीय के अतिरिक्त खिलाड़ियों में पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में क्रीडाधिकारी दिलीप कुमार, कोच दीप पटेल, विकास के साथ ही शुभम पंत, ओम प्रकाश मिश्र, डी.पी. यादव, परवेज आलम, आशुतोष पाण्डेय, सुशील कुमार, मो. आरिफ आदि ने योगदान दिया।

6 मुख्य सेविकाओं को मिले नियुक्ति पत्रः अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाएं भी सम्मानित

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्य सेविकाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किया गया। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सिद्धार्थनगर के अंबेडकर सभागार में भी किया गया। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की निष्पक्ष भर्ती प्रक्रिया के तहत चयनित मुख्य सेविकाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए। इस अवसर पर कन्या सुमंगला योजना की लाभार्थी बालिकाओं और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को भी सम्मानित किया गया। आयोजित कार्यक्रम में जगदम्बिका पाल मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उनके साथ श्यामधनी राही, सैय्यदा खातून, शीतल सिंह, दीपक मौर्य और पूर्व विधायक सतीश द्विवेदी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जी.एन. और मुख्य विकास अधिकारी बलराम सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महिला लाभार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि कन्या सुमंगला योजना के तहत बालिकाओं की स्नातक तक की पढ़ाई के लिए आर्थिक सहायता दी जा रही है, ताकि वे शिक्षित होकर देश के विकास में योगदान दे सकें। उन्होंने यह भी बताया कि मेधावी छात्राओं को स्मार्टफोन और टैबलेट उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे उन्हें तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने में सुविधा मिल सके। मुख्यमंत्री ने मिशन शक्ति अभियान और प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना जैसी योजनाओं का भी उल्लेख किया, जिनके माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि राशन कार्ड और आयुष्मान भारत योजना के जरिए गरीब परिवारों को पांच लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा दी जा रही है। सांसद जगदम्बिका पाल ने नियुक्ति पत्र पाने वाली मुख्य सेविकाओं और कन्या सुमंगला योजना की लाभार्थी बेटियों को बधाई दिए। कहा कि महिलाओं के सशक्त होने से ही देश का विकास संभव है। उन्होंने कहा कि आज महिलाओं को जनधन खातों के माध्यम से सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे डीबीटी से मिल रहा है। विधायक श्यामधनी राही ने कहा कि प्रदेश में मजबूत कानून व्यवस्था के कारण महिलाएं अब सुरक्षित माहौल में अपने कार्य कर पा रही हैं। वहीं विधायक सैय्यदा खातून ने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों और मुख्य सेविकाओं के योगदान की सराहना की। जिला पंचायत अध्यक्ष शीतल सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से युवाओं को अवसर दे रही है और महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चला रही है। कार्यक्रम के दौरान जिले की छह नवचयनित मुख्य सेविकाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए।

देशभर में ठगी करने वाले गिरोह के दो फर्जी जीएसटी अफसर दबोचे, चार की तलाश जारी

संवाददाता–गोरखपुर। राजघाट थाना क्षेत्र के घंटाघर में सराफा व्यापारी के कर्मचारी से जीएसटी अधिकारी बनकर 9.50 लाख रुपये की टप्पेबाजी करने वाले ईरानी गैंग के दो शातिर जालसाजों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। साथ ही आरोपियों के पास से 1.80 लाख रुपये नकद, घटना में इस्तेमाल कार व बाइक पुलिस ने बरामद किया है। आरोपियों को पुलिस ने कोर्ट में पेश किया, जहां से जेल भेजा गया।

पूछताछ में आरोपियों ने अपने गिरोह का नाम ईरानी बताया और चार अन्य सदस्यों के शामिल होने की जानकारी दी है। पुलिस अब उनकी तलाश में जुटी है। पकडे गए आरोपियों की पहचान मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टावर मोहल्ला पिपरिया निवासी हैदर अली और बाराबंकी के गढ़ी जलालपुर निवासी मुस्तफा अली के रूप में हुई। जानकारी के मुताबिक, पीपीगंज निवासी सराफा व्यापारी बलिराम जायसवाल की घंटाघर क्षेत्र में आभूषण की दो दुकानें हैं। 30 जनवरी की सुबह 11:15 बजे उनका कर्मचारी संजय पाल 9.50 लाख रुपये नकद लेकर गीता प्रेस रोड स्थित पंजाब नेशनल बैंक में जमा करने जा रहा था। वह जैसे ही कालीबाड़ी मंदिर के पास स्थित मुंबई क्लाथ हाउस के पास पहुंचा, तभी बाइक सवार दो युवक वहां पहुंचे। इनमें से एक युवक ने खुद को जीएसटी अधिकारी बताते हुए कर्मचारी को रोक लिया और उस पर रौब जमाने लगा। आरोपी ने कर्मचारी से रुपये से भरा बैग ले लिया और जीएसटी के कागजात दिखाने को कहा। जब कर्मचारी ने बताया कि उसके पास कागजात नहीं हैं, तो आरोपी ने उसे कागजात लाने के लिए दुकान भेज दिया और कहा कि बैग यहीं छोड़कर जाओ। घबराया हुआ कर्मचारी जैसे ही कागजात लेने दुकान की ओर लौटा, उसी दौरान दोनों जालसाज बाइक से रुपये लेकर फरार हो गए थे। घटना की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस केस दर्ज कर आरोपियों के तलाश में जुटी थी। सीसी टीवी कैमरों की मदद से आरोपियों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी कर ली। पुलिस के अनुसार, हैदर अली के खिलाफ पहले भी मध्यप्रदेश में आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं।

हैदर 2009 में मध्यप्रदेश के घामापुर थाने से जेल जा चुका है। चोरी के मामले में पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर सामान भी बरामद किया था, लेकिन इसके बाद से वह शातिर तरीके से घटना को अंजाम देकर बचता रहा। अब गोरखपुर में वारदात के बाद उसे पुलिस ने दबोचा है। दोनों को जेल भेज दिया गया है। पकड़े गए आरोपियों के पूर्वज ईरान से आए थे। अब यह सब भारतीय हो गए हैं। इस गिरोह के सदस्य अभी हाल ही में महाराष्ट्र में टप्पेबाजी करने के मामले में पकड़े गए थे। गिरोह के सदस्य देश में घूम–घूमकर अफसर बनकर ठगी करते हैं। सीओ कोतवाली, ओंकार दत्त ने कहा कि घटना के बाद से ही पुलिस सीसीटीवी कैमरे और दूसरे स्रोतों की मदद से आरोपियों की तलाश में जुटी थी। आरोपी एक बार फिर वारदात करने के फिराक में थे, जो दबोचे गए।

आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस ने तीन सौ से अधिक सीसीटीवी कैमरों को खंगाला। गोरखपुर के अलावा दूसरे जिले के भी कैमरों की मदद से पुलिस ने आरोपियों की पहचान की और फिर आरोपियों को उस समय दबोच लिया, जब वह गोरखपुर में वारदात करने के फिराक में थे। अब पुलिस ने उनसे पूछताछ में गिरोह के अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटा ली है। चार अन्य आरोपी की पुलिस तलाश में जुटी है।

जन सेवा केंद्र से बदली गांव की तस्वीर पूजा बनीं आत्मनिर्भरता की मिसाल

महिला दिवस पर विशेष

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कहते हैं कि अगर हौसले बुलंद हों तो सीमित संसाधन भी बड़ी सफलता की राह बना देते हैं। जनपद बस्ती के जमदीह पांडे गांव की रहने वाली पूजा ने इसे सच कर दिखाया है। उन्होंने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना के तहत ध्3,22,222 का ऋण लेकर भारतीय स्टेट बैंक (बस्ती) के सहयोग से "पूजा जन सेवा केंद्र" की स्थापना की और आज वह ग्रामीण क्षेत्र में डिजिटल सेवाओं की मजबूत कड़ी बन चुकी हैं।

पूजा के इस केंद्र पर कॉमन सर्विस सेंटर (ब्ब्) की विभिन्न सरकारी सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे ग्रामीणों को अब छोटी–छोटी जरूरतों के लिए शहर का रुख नहीं करना पड़ता। इसके साथ ही यहां मोबाइल रिपेयरिंग की सुविधा भी दी जा रही है, जिससे स्थानीय युवाओं को तकनीकी काम सीखने और रोजगार पाने का अवसर मिल रहा है।

शुरुआत में पूजा को संसाधनों की कमी और कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। मेहनत, लगन और ईमानदारी के बल पर उन्होंने अपने केंद्र को सफल बनाया। आज उनका जन सेवा केंद्र न केवल गांव के लोगों को डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है, बल्कि अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रहा है।

पूजा द्वारा किए गए इस प्रयास का असर अब साफ दिखाई दे रहा है। ग्रामीण नागरिकों को सरकारी सेवाएं आसानी से मिल रही हैं, युवाओं को मोबाइल रिपेयरिंग का प्रशिक्षण मिल रहा है और गांव में रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। उनकी इस पहल ने गांव में आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की है।

पूजा की सफलता यह साबित करती है कि सही दिशा में उठाया गया एक छोटा कदम भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकता है। आज वह क्षेत्र की महिलाओं और युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुकी हैं।

महिलाओं के अधिकार, सम्मान और बराबरी की लड़ाई तेज करने का आह्वान

संवाददाता–गोरखपुर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को नगर निगम पार्क में अखिल भारतीय प्रगतिशील महिला एसोसिएशन (ऐपवा) और उत्तर प्रदेश आशा वर्कर यूनियन के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ असीम सत्यदेव, जन संस्कृति मंच के राष्ट्रीय महासचिव मनोज सिंह, भाकपा (माले) के राज्य स्थायी समिति सदस्य राजेश साहनी, अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की नेता मालती, तथा उत्तर प्रदेश आशा वर्कर यूनियन की नेता मीनू प्रजापति, पुष्पा राय, अर्चना शुक्ला और जंगल कौड़िया की चन्द्रकला सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए।वक्ताओं ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह दिन दुनिया भर में महिलाओं के समान अधिकार, सम्मान और न्याय की लड़ाई का प्रतीक है।

जिला स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता में दुबौलिया, हड़ही, निपनिया ने मारी बाजी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। आर.पी. साइंस एकेडमी भुवनपुर बक्सर में चल रही दो दिवसीय जिला स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण के साथ रविवार को संपन्न हुई। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आयुष चिकित्साधिकारी डॉ वीके वर्मा और विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष नगर बाजार राना नीलम सिंह तथा प्रभाकर रंजन ओझा ने मेडल और शील्ड देकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। आयोजक विद्यालय के प्रबंधक डॉ सुधीर कुमार पाण्डेय और प्रधानाचार्य अविनाश प्रजापति ने आए हुए अतिथियों का बैज अलंकरण, माल्यार्पण और अंग वस्त्र देकर स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि यदि बच्चे अपनी रूचि के अनुसार कार्य क्षेत्र चुनें तो निश्चित रूप से जीवन में बहुत आगे जाएंगे। बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार कार्य क्षेत्र चुनने के लिए माता–पिता को उनके स्वाभाविक रुझानों को समझना चाहिए और उन पर दबाव नहीं डालना चाहिए। प्रतियोगिता में सब जूनियर बालक संवर्ग में दुबौलिया प्रथम, जेआरसी हडही द्वितीय, कंपोजिट विद्यालय नवली और कंपोजिट विद्यालय निपनिया की संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रही। सीनियर बालक वर्ग में जेआरसी हडही प्रथम, दुबौलिया द्वितीय तथा डीआरसी हसीनाबाद और नौली की टीमें संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहीं। सब जूनियर बालिका वर्ग में कंपोजिट विद्यालय निपनिया प्रथम, डीआरसी हसीनाबाद द्वितीय और बीआरएस गढ़हा तथा आरपी साइंस एकेडमीकी टीमें संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहीं।

सीनियर बालिका वर्ग में पीएस स्पोर्ट्स प्रथम, जीआरसी हडही द्वितीय और हाजी मोहम्मद अमीन इंटर कॉलेज हरैया तथा साइंस अकादमी की टीमें संयुक्त रूप से तृतीय घोषित की गईं। बस्ती खो–खो एसोसिएशन के सचिव राम सिंह ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा आयोजक विद्यालय के प्रबंधक व प्रधानाचार्य को प्रतियोगिता को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। रेफरी की भूमिका में युवराज सिंह, निश्चय सिंह, अमीषा वर्मा, आर्तिका मिश्रा, वीरेंद्र कुमार, विनय श्रीवास्तव, विपिन वर्मा, संतोष कुमार सिंह आदि रहे।

इस अवसर पर राना दिनेश प्रताप सिंह, मंडलीय क्रीड़ा सचिव अमित कुमार यादव, जिला व्यायाम शिक्षक भूपेश सिंह, प्रधानाचार्य सतीश रंजन सिंह, दीपक सिंह, सुनील कुमार, गन्ना विकास इण्टर कॉलेज मुंडेरवा के शारीरिक शिक्षक संतोष कुमार पाण्डेय, अखिलेश सिंह, महंतराम वर्मा, राजेंद्र सिंह, सुनील सिंह, जय राम वर्मा, रणधीर सिंह, प्रेम कुमार वर्मा, कृष्ण गोपाल, विनोद वर्मा, अमित पाण्डेय, कृष्ण कुमार मिश्रा, रामबली, अभय पाण्डेय, शिवरतन प्रजापति, आराधना पाठक, बबीता त्रिपाठी, राम सुंदरी, प्रियंका पाण्डेय, पल्लवी सिंह, फूल कुमारी, आदित्य पाण्डेय आदि उपस्थित रहे।

नशे में धुत युवती का ऑटो सवार बदमाशों ने किया अपहरण, दो हिरासत में

संवाददाता–गोरखपुर। शहर में रविवार सुबह एक नशे में धुत युवती को ऑटो में बैठाकर ले जा रहे बदमाशों को पुलिस ने पकड़ लिया। पुलिस की सतर्कता से युवती को सुरक्षित बचा लिया गया। मामले में दो युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। जानकारी के अनुसार, सिटी मॉल के पास गश्त कर रही पुलिस की नजर एक ऑटो पर पड़ी, जिसमें एक युवती संदिग्ध हालत में बैठी थी। युवती नशे में लग रही थी और ऑटो में बैठे युवक पुलिस को देखकर घबराने लगे। पुलिस ने ऑटो को रोकने का इशारा किया तो उसमें सवार युवक भागने की कोशिश करने लगे। पुलिस ने पीछा कर दो युवकों को मौके से ही पकड़ लिया, जबकि अन्य के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। पूछताछ में आशंका जताई जा रही है कि बदमाश युवती को कहीं सुनसान स्थान पर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म करने की फिराक में थे। पुलिस ने युवती को अस्पताल भेजकर आरोपियों से में पूछताछ शुरू कर दी है, ताकि पूरी घटना की जानकारी मिल सके।

सीएम योगी पर अभद्र टिप्पणी करने वाले को 72 हूरों के पास पहुंचाओ, मुझसे एक करोड़ ले जाओ

संवाददाता–अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां और गोवंश को लेकर कथित अभद्र टिप्पणी के मामले में अयोध्या के संत समाज में नाराजगी देखने को मिल रही है। अयोध्या के तपस्वी छावनी के पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने बिहार के मौलाना अब्दुल्लाह सलीम के बयान पर नाराजगी व्यक्त करते हुए अब्दुल्लाह सलीम का पोस्टर जलाया। पोस्टर जलाने से पहले उसे पैरों के नीचे रौंदा और साथ ही अब्दुल्लाह सलीम को 72 हूरों के पास भेजने वाले को एक करोड़ के इनाम की घोषणा भी की है।

रविवार को परमहंस आचार्य ने विरोध जताते हुए अब्दुल्लाह सलीम का पोस्टर जलाया और उस पैरों तले रौंदकर अपना आक्रोश व्यक्त किया। जगद्गुरू परमहंस आचार्य ने आरोप लगाया कि मातृशक्ति और गोवंश के खिलाफ इस प्रकार की भाषा का प्रयोग अस्वीकार्य है और इससे समाज की भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार से मांग की है कि मामले को गंभीरता से लेते हुए अब्दुल्लाह सलीम के खिलाफ देशद्रोह और एनएसए के तहत कार्रवाई की जाए। परमहंस आचार्य ने यह भी कहा कि गाय भारतीय संस्कृति और आस्था से जुड़ी हुई है और मातृशक्ति के खिलाफ अपमानजनक बयान किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता। आज मातृदिवस के मौके पर उन्होंने इस बयान के विरोध में प्रदर्शन करते हुए सख्त कार्रवाई की मांग दोहराई।

लॉकअप से फरार गैंगस्टर के दो आरोपी दो घंटे में दबोचे, पेट दर्द का बहाना बनाकर भागे थे

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। थाने में बंद गैंगस्टर के दो आरोपित रविवार सुबह सिपाही से मारपीट कर लॉकअप से फरार हो गए, लेकिन पुलिस की तत्परता के चलते दोनों को दो घंटे के भीतर ही धर दबोचा गया। पुलिस ने ड्रोन की मदद से निगरानी करते हुए गेहूं के खेत और नाली में छिपे दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब दोनों के खिलाफ सिपाही से मारपीट करने और लाकअप से फरार होने का मुकदमा दर्ज कर रही है। शोहरतगढ़ थाना पुलिस ने शनिवार रात को गैंगस्टर एक्ट में वांछित नीबीदोहनी निवासी इंद्रकपूर पुत्र बलराम और अकीम पुत्र सरदार हुसैन को गिरफ्तार किया था। रविवार को दोनों को न्यायालय में पेश किया जाना था। इसी बीच रविवार सुबह करीब छह बजे इंद्रकपूर ने पेट दर्द का बहाना बनाते हुए लॉकअप के भीतर जोर–जोर से चीखना शुरू कर दिया।

पहरे पर तैनात सिपाही शशिभूषण को आशंका हुई कि कहीं आरोपित की हालत गंभीर न हो जाए। इस पर उन्होंने लॉकअप का दरवाजा खोलकर कारण जानने की कोशिश की। इसी दौरान मौके का फायदा उठाकर दोनों आरोपितों ने सिपाही के साथ मारपीट शुरू कर दी और धक्का देकर लॉकअप से बाहर निकल गए। इसके बाद दोनों तेजी से थाने से भाग निकले। दोनों आरोपित शोहरतगढ़ कस्बे के झंडा तिराहे से होते हुए शिवबाबा मंदिर के रास्ते खुनुवा रोड की तरफ भागे।

सिपाही शशिभूषण भी उनके पीछे दौड़ पड़े। थोड़ी ही देर में शोर सुनकर थाने के अन्य पुलिसकर्मी भी सक्रिय हो गए और आरोपितों की तलाश शुरू कर दी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस क्षेत्राधिकारी शोहरतगढ़ मयंक द्विवेदी मौके पर पहुंच गए और तत्काल घेराबंदी के निर्देश दिए। इसके बाद शोहरतगढ़ थाने के साथ ढेबरुआ और चिल्हिया थाने की पुलिस को भी मौके पर बुला लिया गया। पुलिस को जानकारी मिली कि दोनों आरोपित खुनुवा रोड स्थित चौधरी मैरेज लान के पीछे की तरफ भागे हैं। इस पर ढेबरुआ थाना पुलिस को खुनुवा की तरफ, शोहरतगढ़ थाना पुलिस को मैरिज लॉन के पीछे तथा चिल्हिया थाना पुलिस को दक्षिण दिशा में तैनात किया गया। क्षेत्राधिकारी स्वयं ड्रोन की मदद से पूरे इलाके की निगरानी करने लगे। कुछ देर बाद ड्रोन की निगरानी के दौरान पता चला कि अकीम खुनुवा की तरफ करीब एक किलोमीटर दूर गेहूं के खेत के पास एक नाली में छिपा हुआ है। उसने अपने ऊपर घास–फूस डालकर खुद को छिपाने की कोशिश की थी। हल्की सी आहट होने पर पुलिसकर्मियों ने उसे दबोच लिया। इसी बीच ड्रोन कैमरे में मैरिज लॉन के पीछे गेहूं के खेत में सरसराहट दिखाई दी। पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो इंद्रकपूर वहां छिपा मिला। पुलिस ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया। थानाध्यक्ष शोहरतगढ़ नवीन कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस टीम तत्काल सक्रिय हुई, जिसके चलते दोनों आरोपितों को जल्द ही पकड़ लिया गया। पुलिस क्षेत्राधिकारी मयंक द्विवेदी ने बताया कि सिपाही शशिभूषण की तहरीर पर दोनों आरोपितों के खिलाफ मारपीट करने और लाकअप से फरार होने का मुकदमा दर्ज किया जा रहा है।

अफवाह से बड़ी दिक्कतें, गैस एजेंसी पर उमड़ रही लोगों भीड

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। रसोई गैस संकट को लेकर जमकर अफवाह उड़ रही है। स्थिति ये है कि जिनको एक सिलेंडर की आवश्यकता है, वह भी दो–दो, तीन सिलेंडर भराने के प्रयास में है। अफवाहों के बीच रसोई गैस एजेंसी पर उपभोक्ताओं की भीड़ उमड़ रही है। भूखे, प्यासे लोग लाइन लगाए दिखाई दे रहे हैं।

रविवार को इटवा में राजा गैस सर्विस के गोदाम पर दो गाड़ियों पर करीब 900 रसोई गैस सिलेंडर की आई। इसकी खबर उपभोक्ताओं को हुई तो सुबह से ही एजेंसी पर पहुंचकर लाइन लगाने लगे। भीड़ ज्यादा होने के कारण अफरा–तफरी की स्थिति रही। उपभोक्ताओं की लंबी कतार लगी रही, लोग गैस सिलेंडर रखकर अपनी–अपनी बारी की प्रतीक्षा में खड़े रहे।

आपूर्ति निरीक्षक इटवा जितेंद्र सिंह गोदाम पर पहुंचे। उन्होंने लोगों को समझाना शुरू किया कि जितनी भीड़ है, उससे ज्यादा सिलेंडर है। अफवाह के चक्कर में न पड़ें। इसके बाद वितरण प्रारंभ हुआ। गैस एजेंसी प्रबंधक मनोज कुमार वर्मा ने बताया कि पर्याप्त सिलेंडर है। गाड़ियां भी निरंतर आ रही है। कोई संकट नहीं है।

आपूर्ति निरीक्षक ने बताया कि अफवाह के कारण दिक्कतें आ रही हैं। उन्होंने उपभोक्ताओं से अपील करते हुए कहा कि एजेंसी गोदाम पर आने की जरूरत नहीं है। सभी लोग अपने गैस की बुकिंग कराएं। निर्धारित तिथि पर उनके घरों पर होम डिलीवरी के तहत गैस पहुंच जाया करेगी।

सूरजकुंड धाम पर प्लॉग रन, नुक्कड़ के जरिए पढ़ाया स्वच्छता का पाठ

संवाददाता–गोरखपुर। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025–26 की तैयारियों के रविवार को गोरखपुर नगर निगम ने सूरजकुंड पोखरा पर 'स्वच्छता की नई पहल–बढ़ाएं हाथ, करें सफाई साथ' थीम के साथ स्वच्छता अभियान चलाया। प्लॉग रन में पार्षदों के साथ अधिकारियों, छात्रों और सामाजिक संस्थाओं सहित 200 से अधिक लोगों ने श्रमदान कर घाट परिसर को कचरा मुक्त किया। इस दौरान महिला सफाई मित्रों अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अभिनंदन कर उनके योगदान को सराहा गया।रविवार को चले इस अभियान का नेतृत्व अपर नगर आयुक्त दुर्गेश मिश्र, प्रमोद कुमार और अतुल कुमार ने किया।नगर निगम के अधिकारियों ने स्वयं झाड़ू और फावड़ा उठा श्रमदान किया।

इससे उपस्थित लोगों में महानगर की सफाई के प्रति जिम्मेदारी का भाव और अधिक मजबूत हुआ। प्रशासनिक अनुशासन और जनभागीदारी का प्रभावी समन्वय देखने को मिला। डीडीयू अभियान के दौरान पार्षद ऋषि मोहन वर्मा, देवेंद्र कुमार गौड़ पिण्टू, जयंत कुमार, जुबैर अहमद, महाप्रबंधक जलकल रघुवेंद्र कुमार, हेरिटेज फाउंडेशन के मनीष चौबे, अक्षर वीणा ट्रस्ट के आनंद राय, सभी जोनल अधिकारी, अधिशासी अभियंता (निर्माण) तथा स्वच्छता चौंपियंस ने मिल कर श्रमदान किया। सामूहिक प्रयासों से कुछ ही घंटों में रामघाट परिसर को पूरी तरह कचरा मुक्त कर दिया।उसके बाद पोखरे की सीढ़ियों की सफाई की गई। अभियान के दौरान 125 किलोग्राम के करीब सिंगल–यूज प्लास्टिक और नॉन–बायोडिग्रेडेबल कचरा एकत्र हुआ जिसे तत्काल विशेष वाहनों के माध्यम से एमआरएफ सेंटर भेजा गया।कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए स्थानीय गायकों ने गीत गाए वहीं, नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति भी की गई। अपर नगर आयुक्त दुर्गेश मिश्र ने विश्वास जताया कि नागरिकों के सहयोग से गोरखपुर आगामी स्वच्छ सर्वेक्षण में जल स्त्रोतों के संरक्षण के कारण 'रिवर टाउन' श्रेणी में देश में पहला स्थान प्राप्त करेगा।

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com